श्री निर्मला देवी नमो नमः

"मेरी इच्छा है कि आप अपनी पवित्रता के द्वारा अपनी पवित्रता को पहचाने और इसे सम्मानित कर सके। यदि आप स्वच्छ वस्त्र पहनें हैं तो आप उनके सम्मान के प्रति जागरूक व सचेत हो जाते है"।

- श्री माता जी

## श्री माताजी निर्मला देवी का भारत दौरा 1989

दक्षिण भारत तथा गुजरात पर श्री माताजी का विशेष अनुग्रह रहा। उन्होंने हैदराबाद, मद्रास, कोयम्बतुर, बंगलोर, अहमदाबाद, बडोदा, राजकोट व चोरहाट में सार्वजनिक भाषण दिये। भारत विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों व संस्कृतियों का देश है। यद्यपि वे सभी पाँच राज्य, जहाँ श्रीमाताजी गई, अलग अलग भाषायें बोलते हैं, फिर भी श्री माता जी की प्रेम की भाषा ने सभी के हृदय को छू लिया। जैसा कि श्रीमाताजी ने कहा,"समस्या भाषा की नहीं, खोजने वालों की हैं, सहजयोग खुले दिमाग वाले व्यक्तियों के लिए ही है।"

हजारों लोगों ने जिन्होंने चैतन्य-लहरी (vibrations) का नाम भी नहीं सुना था, अचानक आत्म साक्षात्कार को प्राप्त किया तथा वे देवी को नतमस्तक हुए। उसी क्षण, मन ही मन, उन्होंने इस शक्ति को मान्यता दी और उसके लिए उन्हें किसी दूसरी व्याख्या की आवश्यकता नहीं थी। हैदराबाद में उनकी, चार वर्ष के पश्चात, यह दूसरी यात्रा थी और हजारों की संख्या में लोग उनके कार्यक्रम में एकत्रित हुए। बंगलौर, कोयम्बटूर, अहमदाबाद, राजकोट और चोरहाट में उनकी पहली यात्रा में ही नये केन्द्रो का शुभारंभ हुआ ।

बंगलौर यात्रा का महत्व, उनकी उस विजय हास्य से प्रकट हुआ जब सहजयोगी उनकी प्रशंसा में "महिषासुर मर्दिनी" गा रहे थे। वे अपने दिव्य रूप में सभी राक्षसों को मारने से पहले उनका पर्दाफाश करती हैं, जिस तरह हमारे अंदर की बुराई (Negativity) प्रकट होने के बाद नष्ट कर दी जाती है। उनके प्रत्येक वाक्य व प्रत्येक मोहिनी मुस्कान में सहस्त्र अर्थ छिपे होते हैं। उन्होंने बहुत सी अद्भुत बाते कहीं जिनमें से कुछ नीचे प्रस्तुत किये है, उनके प्रवचनो को रिकार्ड (Record) करके समस्त विश्व में बाँटने के लिए आस्ट्रिया भेज दिया गया है।

श्री माता जी के दक्षिण भारतीय दौरे मे हुई सार्वजनिक वार्ता के संकलित अंश :

सबसे पहले हमें यह समझना चाहिए कि हम सत्य की न रचना कर सकते है और न ही सत्य को संगठित कर सकते हैं। सत्य है, सत्य था और सत्य रहेगा। हम सत्य को धोखा नहीं दे सकते। हमें सत्य को पाने के लिए उसकी ऊंचाई तक पहुँचना होगा। यह कोई सिध्दान्त नहीं है जिसे हम बदल दें। सहजयोग सत्य के प्रमाण को स्थापित करता है। सभी सिध्दान्त सत्य से ही उद्भूत हुए है पर सत्य का अनुभव कहीं नहीं है।

सत्य की अपनी खोज में हमें अपने प्रति बहुत इमानदार होना चाहिए, न कि अपने से धोखा धड़ी करे। जब आप शुध्द भावना के साथ आते हैं तो सत्य आपके पास आ जाता है। जो सच्चे नहीं है, आपको उनका साथ छोड़ देना चाहिए।

आप दूसरे के प्रभुत्व की चिन्ता क्यों करते हैं यदि उसे यह प्रभुत्व ईश्वर की कृपा से मिला है। ईश्वर को सहजयोग की आवश्यकता नहीं है, आपको ही आत्म-साक्षात्कार की आवश्यकता है। नये लोगों को यह समझना चाहिए कि वह सहजयोग में आकर हम पर उपकार नहीं कर रहें है। यह ज्यादा अच्छा होगा कि ज्यादा संख्याके उच्छखल लोगों की अपेक्षा, कुछ सम्भ्रांत व्यक्ति ही सहजयोग को अपनाये। सहजयोग कोई प्लास्टिक नहीं है कि आप उसका बडी संख्या में उत्पादन करते रहें। इसका आरंभ कुछ ही थोडे व्यक्तियोंसे होना हैं।

बहुत सारे दुष्प्रभाव अब चले गये हैं। यदि मानवता को बचाना है तो आपको लोगों को बदलना पडेगा। यह एक अत्यधिक बड़ा कार्य है। कुछ दुसरे कार्य करना आसान है। एक डॉक्टर, इन्जिनियर वकील या अन्य व्योसायिक व्यक्ति होना आसान है। जो मानवता की रक्षा करेगा उसका नाम अध्यात्मवाद के इतिहास मे अमर रहेगा। मानवता को बदलना कितना दुरुह काम है। इसलिए आप स्वयं से तथा अपने चित्त से सावधान रहें।

आत्मसाक्षात्कार देना कोई कठिन कार्य नहीं है परन्तु उसको बनाये रखने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता हैं। क्योंकि मनुष्य आसानीसे विचारों मे खो जाता है। यदि आप सहजयोग सामुहिकता मे करे तो इसकों बनाये रखना कठिन समस्या नहीं है क्यों कि सभी साधन सहज योग द्वारा बताये गये हैं।

अपने विकास में हमने जो पाया है वह हमारे केन्द्रीय नाड़ी मंडल(Central Nervous Syst
के द्वारा प्रकट होता है। पूर्व में, लोगों का विश्वास था कि हमें क्षणभंगुर वस्तुओं का अनुग्रह करने की बजाय अनन्त प्रकाश की ईच्छा करनी चाहिए। क्षणभंगुर वस्तुओं का अस्तित्व है और उनका अस्तित्व बनाये रखने के लिए उनका प्रयोग सही मर्यादा में करना चाहिए। जब आप मर्यादाओं को

पार कर जाते है और उनमें अत्याधिक लिप्त हो जाते है तो वे विनाशकारी और दुर्भाग्यपूर्ण बुराईयाँ बन जाती हैं।

प्रत्येक अणु, शाक-सब्जी, पशु व मनुष्य के विकसित होने में अनन्त सर्व देदिप्यमान शक्ति कार्य करती है। ईश्वर ने इस सृष्टि की रचना इतने संगठित ढंग से की है, और दैवी शक्ति इसका बारीकी से ध्यान रखती है परन्तु वह इसे माया द्वारा अज्ञानता से ढक देता है। इस माया के कारण मनुष्य आसानी से क्षणिक भावनाओं की ओर झुक जाता है और उसमें खो जाता है। मनुष्य की समझ एक ही संकुचित रास्ते पर आगे पीछे चलती रहती है परन्तु दैवी शक्ति सभी दिशाओं को एक जैसा प्रकाशमान करती है। आप कम्प्युटर की तरह है परन्तु कम्प्यूटर को विद्युत की मुख्यधारा से जोड़ना पड़ता है। एक बार आप ईश्वर के साम्राज्य में आ जायें तो आपको विदित होगा कि उसका प्रशासन दयावान, प्यार करनेवाला, सर्वाधिक उद्यत और सक्षम है। महत्वपूर्ण यह है कि यहाँ प्रेम की शक्ति द्वारा कार्य सम्पन्न हैं। सर्वशक्तिमान भगवान जिसनें इस संसार को बनाया है उसे इसके हित की आपसे अधिक चिन्ता है।

तालाब में कीचड़ व गंदगी होने पर भी वहाँ कमल खिलते हैं। वह अपनी सुगंध सारे संसार में फैलाते हैं तथा उसे अपनी सुन्दरता से भर देते है। कमल इतना कोमल है परन्तु फिर भी उसकी पंखुडियाँ काँटेदार पैरों वाले गोबरैला(Beetle) के लिए खुली रहती हैं। इसीप्रकार सहजयोग में आपका व्यक्तित्व, सुन्दर कमल की भाँति विकसित होता है, जिसकी पत्तियों पर पानी नहीं ठहरता है। जिसका लक्ष्मी तत्व परिपूर्णसे जागृत हो जाता है ऐसा व्यक्त कमल पर खड़ा हो सकता है। वह किसी पर बोझ नहीं बनता। उसका हृदय कमल की भाँति सुगन्धित रहता है। श्री लक्ष्मी एक हाथ से देती हैं व दूसरे हाथ से संरक्षण करती है जैसे कि पिता अपने बच्चों को छतरी से। इसी तरह एक ज्ञानी उद्यमी अपने लोगों की भलाई का हमेशा ध्यान रखता है। रूपये-पैसे का चलन रेखाकीय है और इसके लालचसे बहुत सी बिमारियों का जन्म होता है। आप लोगों को सोचना चाहिए कि धनी लोगों के बारे में लोग क्या कहते हैं।

8-2-89 को मद्रास में श्री मूर्ति के घर श्री माता जी की पूजा वार्ता :

कलियुग में मनुष्य केवल क्षणिक लाभ के लिए दूसरों का ध्यान आकर्षित करने में अपना समय नष्ट कर रहा है। एस पागल संसार में सहजयोगी की स्थिति क्या है? आप देखते है कि संसार क्षणभंगुर वस्तुओं के पीछे भाग रहा है। परन्तु हमें तो अनन्त को खोजना है। नये युग में कुछ नयी परिस्थितियाँ व बन्धन है। सबसे अधिक कठिन बंधन समय का है। समय को बचाने के लिए हम हर समय योजना बनाते रहते है परन्तु फिर भी हम देखते हैं कि कोई भी चीज समय पर पूरी नहीं होती है {उन्मुक्त हँसी}

भविष्य वादी व्यक्ति ` ` सहज योगी नहीं ` है। आज के समय में जीवन इतना गतियुक्त और कष्टमय हो गया कि विफलता का अनुभव बहुत हानिकारक होता है। उदाहरण के लिए जब व्यक्ति हाथ में हवाई जहाज का टिकिट लेते हैं तो घबरा जाते है। जिस समय उनको पता चलता हैं कि उन्हे हवाई अड्डे जाना है तो वह कॉपने लगते है। उसका परिणाम यह होता है कि वे कुछ वस्तुएँ भूल जाते हैं और उनका हवाई जहाज भी छूट जाता है। परन्तु सहज योगी को जानना चाहिए कि यदि वह सच्चे सहजयोगी है तो उनका यान कभी नहीं छुट सकता। सहज-योगी को "कालातीत" {समय के परे} होना है। यदि आपका चित्त वर्तमान में नहीं है तब वह भविष्य में है और आप अगली वस्तु के बारे में सोचते रहते हैं। आपका चित्त समय पर केन्द्रित होने के कारण विषय को समझने में चूक जाता है। और वह बहुमूल्य क्षण नष्ट हो जाता है। अतः आप अपने चित्त को तनावरहित रखिये। आपको अपना चित्त ∠1 में रखना है और देखना है कि ∠2 हो रहा है मनुष्य केवल आगे-पीछे भाग रहा है। एक बार इंग्लैंड में हम एक शादी में गये। लोग उसमें शामिल होने के लिए इतनी जल्दी में थे कि जब वे वहाँ पहुँचे तब चर्च भी {गिरजाघर} नही खुला था। {उन्मुक्त हँसी}

हमें भविष्यवादी नहीं होना चाहिए इससे एकाग्रता टूट जाती है। ∠3 ठीक समय पर हर चीज़ याद आती है और प्रत्येक कार्य "सहजता" से हो जाता है। आखिर हम लोग कौनसा ऐसा विशेष कार्य कर रहे हैं - सिर्फ हवाई अड्डे पर प्रतीक्षा। हमें पूछना चाहिए कि "क्या हम स्वयं में आनंद का अनुभव कर रहे हैं।" यदि हम किसी भी प्रकार का आनंद नहीं पा सकते तो फिर हम इसे क्यों कर रहे हैं। तत्व यह है कि हमें आनन्द में रहना चाहिए।

जब हम पूना हवाई अड्डे पर गये तो, हवाई-जहाज तीन घंटे देरी से था। सभी सहजयोगी मुझसे मिलने आये थे। सबने इस समय सामूहिकता का आनन्द लिया। तब मैंने अपना ध्यान उन सब सहजयोगियों पर केन्द्रित किया जो मुझसे मिलने हैदराबाद हवाई अड्डे पर आये थे। इससे सब सहजयोगियों को एक दूसरे को जान लेने का अवसर मिला। सभी सहजयोगियों ने आपसी वार्तालाप का आनंद लिया और अपने अनुभव बाँटे। मानव सम्बन्धों की सुन्दरता का आनन्द लिजिए। मैं कभी कुछ नहीं करती, मैं "अकर्म" की स्थिति में रहती हूँ। अतः आप भी एक साक्षी के रूप में अपना स्थान बनाईये। अपने आप मे तनाव और रक्तदाव बढ़ाने का क्या उपयोग है?

सबसे प्रथम आपको समय बोध से बाहर निकलना सीखना है। तब आप पायेंगे कि हर काम आपके समयानुसार हो रहा है। मनुष्य को अत्याधिक कार्यव्यस्त अथवा आलसी होने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक कार्य अपने समय पर होता है जैसे कि महिलाएँ अपना समय लेती है। {उन्मुक्त हँसी}

∠1 मध्य , ∠2 क्या, ∠3 सहज में

सहज योग के आशीर्वादो मे से एक यह है कि आप समय को भूल जाते है। सहज योग का आशिर्वाद प्राप्त कीजिए।

हमे उसी तरह रहना चाहिए जो कि हम है। यदि आप महिला है तो महिला की तरह ही रहिए, यदि पूरुष है तो पुरुष की भाँति रहिए। सहज योग में आपको अपने पुरुषत्व को विकसित करना है। यदि कोई पुरुष किसी स्त्री के पीछे भागता है तो वह स्त्री है {हँसी} ऐसे पुरुष को तो डाक्टर के पास भेज देना चाहिए। उसके अन्दर एक तरह का भूत है। यदि आप हमेशा इधर उधर देख रहे है तो आपका चित्त वहाँ नहीं है। आपका चित्त उस एक झील की तरह शांत होना चाहिए जिसमें कोई लहर न हो - जो सारे संसार में समस्त आनंद को प्रतिबिंबित करे। सिर्फ एक "कटाक्ष" ही आत्मसाक्षात्कार देने के लिए काफी है।

सर्वत्र संचार माध्यम में न आनन्द है और न कोई भावना। यह तो एक बहुत चंचल चित्त को जन्म देती है। इससे तमाम शारिरिक समस्यायें आरम्भ हो जाती है। एक सहज योगी के लिए आवश्यक है कि वह अपने चित्त को स्थिर रखे। मेरे चरणों मे ध्यान लगाने से चित्त स्थिर होता है। आपका चित्त शुध्द बना रखने के लिये आपकी दृष्टि भी शुध्द होनी चाहिये। यह एक स्थिति है जहाँ आप केवल एक साक्षी बन जाते है, बिलकुल उस पंखे के पहिए के समान जो घूम तो रहा है परन्तु अपने स्थान पर स्थिर दिखता है।

आपको केवल देखना चाहिए सोचना नहीं। यदि आपको कुछ पाने का आनन्द लेना है, तो उसके मुल्य पर ध्यान मत दें जो आनंद व प्रेम से एक कलाकार अपनी कृति बनाने मे लगाता है वह एक आनंद के सागर के समान आपके उपर बरसता है। आप में एक आनन्द के सागर सो होने लगता है। जिसका अनुभव आप केवल "निर्वाण" अवस्था मे रह कर ही कर सकते है। आप सोचिए कि आप दूसरों को क्या दे सकते है। साड़ी खरीदते समय भी हमें गरीब बुनकरों के बारे में सोचना चाहिए। उनके काम के बारे में भी सोचना चाहिए। प्रत्येक वस्तु के पीछे एक तत्व होता है। यदि आपका चित्त वहाँ है तो आप उस तत्व को देख सकते है।

फैशन एक ऐसी बुराई है कि चित्त फैशन का गुलाम बन जाता है और प्रत्येक व्यक्ति अन्धाधुन्द वही पहनता है। सहजयोगी को क्षणभंगुर कल्पना पर जीने की इच्छा नहीं करनी है केवल इन सब पर हँसना है। हमें इन नश्वर क्षणभंगुर विचारों पर अपनी शक्ति खतम नहीं करनी है। हम एक ठोस आधार पर खड़े है, गहराईमे आनन्द रहे है और निरर्थक बातों का उपहास कर आनन्द उठा रहे है। जैसा कि कबीर ने कहा है, "मैं उनको कैसे समझाऊं जो स्वयं अंधे है"। इस अवस्था में हम केवल आनन्द प्राप्त करते है, और दर्द का अनुभव नहीं करते। आप कलियुग की हास्यप्रद स्थिति को देखिये और केवल उसका आनन्द लीजिए।

ले,

अन्य व्यक्तियो को आपके अंतरमे एक अनोखा पन, पवित्रता, करुणा व शान्ति दिखाई देनी चाहिये। आप सहजयोग के विज्ञापन है, आप एक प्रकाश है। यही निर्मल धर्म के अनुयायी (Nirmali का वर्णन है। जैसा कि नामदेव ने गोराकुंभार से मिलने के पश्चात कहा "मैं तो निर्गुण को देखने आया था और उसको आपके अन्दर सगुण के रूप में देख रहा हूँ।" किसी दूसरे की यह कितनी अच्छी प्रशंसा है। एक दूसरे के अन्दर के सौन्दर्य को देखिए और उसका आनन्द उठाईये।

आपको अपने ध्यान में केवल यह कहना है/"हमे चित्त के प्रकाश की शुध्दता प्रदान हो"।

मैं तो आपकी इच्छा पर हूँ। यदि आप कहते हैं कि माँ मेरे हृदय में विराजिए तो मैं आपके हृदय मे बस जाती हूँ, यह तो मेरी उदारता है। मुझे सहजयोग की आवश्यकता नहीं है। सहजयोग की आवश्यकता तो आपको है। आप की ही भलाई के लिए मैं यहाँ हूँ। सहज योग का आशिर्वाद प्राप्त कीजिए।

ईश्वर आपको सुखी रखे।

पुजा के पश्चात सभी सहजयोगियों ने श्री माता जी के श्री चरणों में निम्न प्रार्थना समर्पित की

" ॐ त्वमेव साक्षात श्री चित्त -शक्ति साक्षात श्री आदिशक्ति माता जी श्री निर्मला देवी नमो नमः"

हे लज्जा की देवी, सारे सहजयोगी आपके समक्ष नतमस्तक है। आपने हमे अपनी पूजा करने का शुभ अवसर दिया, उसके लिये हम हृदय से आभारी है। हम सब आपकी सन्तान, जिन्होंने आपकी पूजा के प्रसाद का आनंद उठाया व आपका आशीर्वाद प्राप्त किया, कामना करते है कि हम उन सब सद्गुणों का अनुसरण करे जिन्हें आपने खुले हृदय से हम पर बरसाया है। हम कामना करते है कि हम सहजयोग का संदेश फैलाये और आपके नाम को चार चाँद लगाये।

अन्त मे श्री-मूर्ति द्वारा लिखित एक तेलिगु भजन श्री माता जी की स्तुति में गाया गया। देवी अत्यधिक प्रसन्न हुई और उन्होंने इच्छा व्यक्त की, कि वह भजन अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर गाया जाना चाहिए।

## कार्यक्रम के दौरान प्रश्नोत्तर

प्रश्न :- गुरु की व्याख्या क्या है?

गुरु को अपने शिष्य की पूरी भलाई व धर्मपरायणता का उत्तरदायित्व एक माँ की भाँति लेना पड़ता है। गुरु वह हैं जो अपने शिष्य को ब्रह्म चैतन्य से जोड़ता है। आप उसे

खरीद नहीं सकते। यदि आप गुरु को खरीदते हैं तो वह आपका सेवक हो जाता है, गुरु नहीं रह सकता।

प्रश्न 2· राज योग, भक्ति योग, जप योग व सहज योग में क्या अन्तर है?

आधुनिक राजयोग, बिना ईधन को जलाये कार के पहियों को चलाने के प्रत्यन के समान है। राजयोग अपने आप ही सहजयोग में समाविष्ठ है। जैसे खाना खाते ही हमारा पाचनतंत्र स्वयं ही क्रियाशील हो जाता है। उसी तरह जब कुंडलिनी जागृत होती है तो आप स्वयं ही ईश्वर से जुड़ जाते हैं। जब आप ईश्वर के साम्राज्य में हैं तो एक बार ही ईश्वर का नाम लेना {ध्यान देना} काफ़ी है। बार बार ईश्वर का नाम जपकर यह मत समझिये कि ईश्वर आपकी जेब मे हैं। {उन्मुक्त हँसी}

भक्ति दो प्रकार की हो सकती है, पहली-अन्ध भक्ति, दूसरी - जागृत भक्ति अर्थात सहजयोग। ईश्वर से बिना जुड़े भक्ति करना व्यर्थ है। वह एक बिना सम्बन्ध जोड़े फोन करने के समान है। श्री कृष्णजी के कथनानुसार यह अनन्य भक्ति होनी चाहिए अर्थात इस जैसा अन्य कोई हो ही न।

प्रश्न 3· सभी नदियाँ कहीं न कहीं जाकर समुद्र में गिरती हैं, हमें कैसे ज्ञात होगा कि हम कब पहुँचे?

मैं सोचती हूँ की आप, अपनी यात्रा के गंतव्य पर पहुँच गये हैं। यदि आप सोचते हैं कि आप नहीं पहुँचे, तो अच्छा हो कि आप वापिस जायें और फिर अपनी यात्रा कर यहाँ पहुँचे। {उन्मुक्त हँसी}

प्रश्न 4· गीता का उपदेश अर्जुन को दिया गया था लेकिन इसका आदेश सार्वभौमिक है।

सभी ग्रन्थो का उपदेश सारी मानवजाति के लिए है। यह सिर्फ शब्दों तक ही सीमित नहीं अपितु अपने को उसके अनुसार ढालने में है। एक स्थित प्रज्ञा {जागृत आत्मा} तथा गीता के अध्ययनकर्ता या उपदेशक में इतना अन्तर क्यो हैं? क्योंकि आपको एक "स्थित प्रज्ञा" बनना है, उसी कार्य के लिए मैं आई हूँ।

प्रश्न 5· शिक्षा के सम्बन्ध में?

उच्च शिक्षा पा लेना ही काफी नहीं है। निर्णय क्षमता (Discretion) का भी प्रयोग करना है।

प्रश्न 6· क्या ध्यान करना(Meditation) ,मेस्मेरिजम है?

मेस्मेरिजम में मानव चेतना नहीं रहती। सहजयोग में मानव चेतना जागृत व विस्तृत होती है। वह असीम् हो जाती है। मेस्मेरिजम में आपकी आँखे खुली रहती है जिनसे आप अचेत

अवस्था में पहुँचाये जाते हैं जबकि सहजयोग में ध्यान करते समय आपकी आँखे बन्द रहती हैं। इसलिए उनका प्रयोग मेस्मेरिज़्म के लिए नहीं किया जा सकता।

प्रश्न 7· महाराष्ट्र में अकाल क्यो? जबकि यह एक योग भूमि है।
क्योंकि यहाँ के लोगों ने चीनी से शराब बनाना शुरू कर दिया है। जो योग भूमि में रह रहे हैं उन्हें ज्ञान होना चाहिए कि वह क्या कर रहें हैं। जो इस योगभूमि में पैदा हुए हैं उनका बड़ा उत्तरदायित्व है कि आत्म जागृति प्राप्त करें।

गुजरात

लोग पश्चिम की ओर देखते हैं, परन्तु भौतिक वस्तुओं से सुख नहीं मिलता। आज आपके पास एक वस्तु है कल आप दूसरी वस्तु की इच्छा करेंगे। पहले मँहगे गुरूओं का फैशन था, आज मादक द्रव्यों ने उनका स्थान ले लिया है। वह ऐसे मादक द्रव्य लेते है जो उनके दिमाग को∠ढालता है। फिर वह कान फोड़ देने वाला पॉप संगीत सुनते हैं, इस लिए उनका मस्तिष्क (Limbic Area) चेतनाशुन्य व संज्ञाहीन हो जाता है। उन्हें ज्यादा गहरी व तीव्र संवेदना∠अनुभूति की आवश्यकता होती है। क्या यही सब उनकी आजादी ने उन्हें दिया है कि कैसे अपनी जिंदगी बरबाद की जाये? वह तो अपनी आजादी का दिखावा ्र करते है। वह अपने बालों को रंग सकते है, मनचाही पोशाक पहन सकते है, चाहे वह हास्यप्रद व असभ्य ही नजर आये; जैसा कि मैंने हालोवीन में देखा।

अमेरिका अधिक गरीब देश हो गया है। उनका सारा पैसा कहाँ गया? ऐसी उन्नीत से क्या फायदा जो लोगों को निराशा की चर्मसीमा पर पहुँचाकर आत्महत्या करने को बाध्य करे। स्वीडन, स्विजुरलैंड, और नोर्वे का रहनसहन सबसे उच्च है फिर भी वह सब इस प्रतियोगिता में रहते हैं कि सबसे अधिक आत्महत्यायें कहाँ होती है। जब हम किसी को गड्डे में गिरते देखते हैं तो हम उसका अनुसरण क्यों करे ?

आप अपने परिवार के लिए कितना परिश्रम करते हैं, क्या आप थोड़ी सी मेहनत अपनी अन्तर आत्मा की खुशी के लिए नहीं कर सकते? जो मनुष्य आत्म साक्षात्कार पा लेता है वह समर्थ बन जाता है। उसकी कोई भी आदत नहीं बनती, न ही कोई उसे वश में कर सकता है। वह तो पहिये की धुरी के समान स्थिर और शान्त रहता है। उसी प्रकार आप जागरूक लोग सभी चीजें देखते हैं परन्तु उनका प्रभाव आप पर नहीं पड़ता।

स्त्री और पुरूष के अधिकार समान है लेकिन फिर भी यह एक जैसे नहीं है। नारी मुक्ति के लिए यह समझना आवश्यक है। स्त्री का स्थान धरती माँ के समान है। वह आँखो को शान्ति देने

1 ∠घुमा, 2 ∠और

वाले हरे परिधान पहनती है, वह पोषण करती है, वह माँ की तरह सहनशील है और हमारे पापों को क्षमा करती है। मैं सोचती हूँ कि एक पत्नी अपने पति से किसी भी प्रकार से कम नहीं है। यदि स्त्री अपनी शक्ति का उत्तरदायित्व जान लें तो और भी शक्तिशाली हो सकती है। भारतवर्ष में कहा जाता है कि "स्त्री पूज्यनीय है" परन्तु वह पूजा योग्य भी तो होनी चाहिए। तुम्हें पति/पत्नि का सुख तो मिल सकता है परन्तु आनंद आत्मा से ही मिलता है। आत्मा सुख और दुख से परे है उससे तो केवल आनंद ही प्रस्फुटित होता है।

## श्री माताजी के दौरे का एक दिन

राजकोट के तीन घंटे की धूल भरी कार यात्रा के पश्चात सबसे बड़े समाचार-पत्र के संवाददाता द्वारा श्री मातजी का स्वागत किया गया।

अभी श्री माताजी ने अपने कमरें में प्रवेश ही किया था कि दो अधीर पत्रकार कमरें में जबरदस्ती घुस आए और श्री माताजी से साक्षात्कार के लिए विनंती करने लगे। यह साक्षात्कार वह अपने समाचार पत्र में छापना चाहते थे जो कुछ घण्टों बाद ही निकलने वाला था। राजेश भाई ऊपर खाना लेकर वापिस आय. तो उन्होंने वह जागृत आत्मायें देखी।

अब पत्रकार सम्मेलन का समय हो चुका है। राजेश प्रश्न काल के लिए शान्त बैठे है कि प्रश्नोत्तर का उपद्रव एक तेज तरार स्त्री पत्रकार से शुरू होता है। पाँच मिनट के पश्चात वह स्त्री पत्रकार मोम की तहर पिघलने लगती है। पत्रकार श्री माता जी से आत्म साक्षात्कार करवाने के लिए प्रार्थना करने लगते है। "क्या तुम्हे विश्वास है कि तुम्हे आत्मसाक्षात्कार पाना है"? श्रीमाताजी ने पूछा। "हाँ, हाँ"। सभी पत्रकारों को माता जी के आशीर्वाद से आत्मसाक्षात्कार मिला। प्रश्नों का क्या हुआ?

व्यवस्थापकों की तरफ से इमरजेन्सी संदेश मिलने शुरू हो गए हैं क्यों कि पब्लिक कार्यक्रम का समय हो गया है। एक हजार लोगों के लिए बने सभा भवन में 1200 लोग बैठे है। 1000 व्यक्ति सभा भवन में और 200 व्यक्ति मंच पर। बाहर उद्यान में भी 1000 प्रतीक्षारत लोगों के लिए लाऊडस्पीकर लगाए गए हैं।

श्री माताजी ने जोर दार तालियों की गड्गड़ाहट में प्रवेश किया। सबने श्रीमाताजी के व्याख्यान खतम होने से पहले ही आत्मसाक्षात्कार पा लिया। अधीर भीड़ आगे का प्रोग्राम जानने के लिए बैचैन थी परन्तु : उपरान्त प्रोग्राम*/नहीं रखा गया था। व्यवस्थापक साहिब क्या हुआ नरसा?

* (Follow up)

चोरवाड़ समुद्र के किनारे एक आश्रय स्थान है जहाँ राजेश शाह का पैतृक घर है। वहाँ ही श्री माता जी की पूजा की गई। श्री माताजी का स्वागत शहनाई के मधुर संगीत व तुमुल ध्वनि से किया गया। कुँवारी कन्याएँ गुलाब की पंखुडियाँ बिखेरते हुए श्री माताजी को मण्डप में ले गई। यह मण्डप नारियल के बाग में बनाया गया था। हजारों ग्रामीण श्री माताजी की पूजा के लिए एकत्रित हुए। श्री माताजीके कमल चरणोंके नीचे केले के पत्ते रखे गए और गुजरात की प्रचलित माता अम्बा की प्रशंसा में सहृदय आरती गाई। देवी माँ बहुत प्रसन्न हुई।

नाचते, गाते, परमानंदित जनसमुदाय के साथ श्री माताजी बैलगाड़ी में बैठ कर सार्वजनिक कार्यक्रम के लिए आती हैं। कुँवारी कन्यायें पानी के कलश लिए हुए श्री माता जी का शुभ शगुन स्वागत करती है। अथाह जन समूह उनकी चरण धूलि लेने के लिए झुकता हुआ ऐसा प्रतीत होता है मानो असंख्य प्रकाश पुंज एक प्रकाश सागर में लीन हो रहे हों।

सायंकाल के लोकनृत्य का समाँ बंधा रहा जो देर रात तक चला परन्तु सूक्ष्म में श्री माताजी का ध्यान केवल कैन्सर के रोगी को ठीक करने में लगा था और वह बिल्कुल ठीक भी हो गया। अन्त में कार्यक्रम परम आनंद की चरम सीमा पर पहुँच कर श्री कृष्ण के परम प्रिय पवित्र नृत्य डाँडिया रास तक पहुँच गया लेकिन श्रीमाताजी के प्यार की रास तो सब सीमाओं को लाँघ चुकी थी जिसकी सुन्दर व्याख्या तो कोई कवि ही कर सकता है। हम अब कहाँ है, इसका उस समय किसी को भी ज्ञान न था।

जय श्री माता जी।

---

वार्षिक चंदा - 108 रुपये
कृपया ड्राफ्ट निम्न पते पर भेजे

विश्व निर्मल धर्म
पो॰ बा॰ नं॰ 190।
कोथरोड, पूना 411 029
भारत

खंड १ अंक २

ॐ श्री निर्मला देवी नमो नमः

कुछ लोग धनी हैं, कुछ लोग गरीब; यह सब क्षण भंगुर चीजें हैं, अपने हृदय के अंदर देखिए और उस प्रेम का आनंद लीजिए। प्रेम के साथ आप ऊपर उठिये और एक बार फिर से महानता को प्राप्त कीजिए।

श्री माताजी

## श्री माताजी निर्मला देवी की भारत यात्रा 1989

चैतन्य लहरी के पिछले अंक में दक्षिण भारत और गुजरात में हुए श्री माताजी के कार्यक्रमों का वर्णन संक्षेप में किया गया था। भारत यात्रा में नागपुर, दिल्ली लखनऊ, देहरादून, बम्बई, पटना, कलकत्ता और नेपाल के कार्यक्रम भी शामिल हुए। उन्होंने जो अद्भुत बातें कही, उन सबके साथ न्याय करने के लिए एक पुस्तक लिखनी पड़ेगी। तब तक के लिए दिव्य संदेश को बाँटने के लिए यह संकलित अंश प्रस्तुत किया जा रहा है। नागपुर हमें अपने घर आने जैसा लगा। हम श्रीमाताजी के पुश्तैनी स्थान {होम टाऊन} की खुशी और प्यार को महसूस कर रहे थे। जो व्यक्ति उन्हें बचपन से जानते थे उन्होंने उनसे संबंधित बहुत सी सुन्दर घटनायें सुनाईं। एक सज्जन जो अब एम.पी. हैं उन्होंने एक छोटी पुस्तक दिखाई, जिसपर श्री माताजी का नाम एक समाज कल्याण संस्था की अध्यक्षिका के रूप में लिखा था। उनका बचपन अनेक मानव - कल्याण कार्य करने में गुजरा। यह आश्चर्य की बात थी कि वह उन सब लोगों को पहचान सकीं, जिनसे वह वर्षों से नहीं मिली थीं - यह यादों का प्रकाशित होना था। फिर वहाँ वह विद्यालय था जहाँ उन्होंने पढ़ाई की, गलियाँ और बगीचे जो कभी श्री बालकृष्ण साक्षात के दिव्य लीलाओं के दृश्य थे। बाबा मामा ने अपने अलंकारित भाषा में नागपुरी स्वागत से सब लोगों को गद्‌गद कर दिया तथा उसमें संगीत का आनंद घोल दिया।

श्रीमाताजी द्वारा दिल्ली आश्रम का उद्घाटन एक दिव्य घटना थी। जैसे ही दैव्य ने अपने आशिर्वाद की वर्षा की, हम लोग दिल्ली के भाई - बहनों के त्याग पर खुशी के आश्रुओं से भर गये जो कि प्रेम के स्मारक के निर्माण में लगा है। इस बार दिल्ली में अत्यधिक जन कार्यक्रम हुए। इस बार राजधानी

दून घाटी ने पर्वतों की देवी का खुले हृदय से स्वागत किया। सब जगह ऐसा घोषित किया गया कि "खिलने का समय आ गया है"। जिस प्रकार प्रकृति ने रंग-बिरंगे फूलों की अनुपम घटा बिखेरी हुई थी उसी प्रकार देहरादून के लोगों की आत्मजागृति का समय आ गया था।

सारे विश्व से सहजयोगी श्रीमाता जी के 66वे जन्मदिन के उपलक्ष में उनके अभिनंदन के लिए एकत्रित हुए थे। जैसे उदित होते सूर्य की किरणों के साथ पुष्प की प्रत्येक पखुंडी खुलती है उसीप्रकार श्री माताजी की मधुर जन्मदिन - मुस्कान से प्रत्येक हृदय के द्वार खुल गये। उनके जन्मदिन पर हमने अपने पुर्नजीवन का आनंद महसूस किया। हम सब की आत्मायें श्री माताजी के प्यार व तेज से देदीप्यमान थी व उसे प्रतिबिम्बित कर रहीं थीं। कुमारी कीर्ति शेलिदार ने शास्त्रीय संगीत जिसमें पारंपारिक नाट्य संगीत शैली थी, के द्वारा, श्री माताजी का बधाई अभिनंदन किया। अगले दिन श्री माताजी के जन्मदिन की पूजा में श्रीमाताजी/पुरे ब्रम्हांड के अपने बच्चों को आशिर्वाद दिया।

जय श्री माताजी

"सहजयोग में प्रसन्न रहना अनिवार्य है", इस पूर्ण विश्वास के साथ कलकत्ता ने सहजयोग ग्रहण किया। "माँ का आह्वान है, आईये" इस नारे (स्लोगन) पर बंगाल के दूरदराज से इच्छुक व्यक्ति खिंचे चले आये। पहली दो रातें सभी सहज योगियों ने बारासात के एक बहुत ही शान्त कैम्प में एक परिवार की भाँति गुजारी। बारासात एक गाँव है, जहाँ से हर वर्ष दुर्गा-देवी का जलूस दुर्गा-पूजा के लिए आरंभ होता है। बंगाल की उस मिट्टी की पवित्रता के साथ जिसे महिषासुरमर्दिनी का आशिर्वाद प्राप्त है, लोगों ने आत्मसाक्षात्कार पाया। "सारी जातियों के लोग आओ, भारत के समुद्रतट पर माँ का अभिषेक करें" रविन्द्रनाथ टैगोर की यह भविष्यवाणी पूर्ण हुई।

कलकत्ता से श्री माताजी नेपाल आई। नेपाल ही शायद एक ऐसा पूर्ण हिन्दू राज्य है जहाँ देवी दुर्गा की पूजा कई रूपो में की जाती है। क्योंकि उनके दैनिक जीवन में देवी की मूर्ति-पूजा और मन्त्रों में विश्वास व सच्चाई का मिश्रण है, इसीलिए वह श्री माताजी को देवी रूप में स्वीकार कर सके। इसकी अत्यधिक सम्भावना है कि वह दिन दूर नहीं जब वह सब इस आधुनिक युगावतार की सत्यता का आनंद लेंगे।

नागपुर में सहजयोगियों से वार्ता

(मराठी से अनुवाद किए गए संक्षिप्त अंश)

माँ का स्थान एक विशेष स्थान है और हमें बहुत सारी बातों का ध्यान आता है। नाग में सहजयोग का विस्तार हो यह बात कई बार मेरे ध्यान में आती है परन्तु कभी कभी माँ के स के लोग माँ से ही दूर रहते है। वह नहीं देखते कि उनके चारों तरफ क्या है। दूर की वस्तु पर हम ध्यान जल्दी जाता है परन्तु जहाँ हम रहते है, जहाँ जीवन यापन करते है वह स्थान वहाँ के लोगों लिए इतना पास हो जाता है कि वह हमारी गहराईयों को नहीं पहचान पाते है - यही कारण है नागपुर में सहजयोग देर से आरंभ हुआ। मेरे बाल्यकाल के कारण यहाँ बहुत चैतन्य फैला हुआ है सूक्ष्म रूप से यहाँ काफी कार्य किया जा चुका है और मुझे ज्ञात है कि एक दिन यह यहाँ जरूर फलेगा।

अपने पिताजी के कारण, जो कि स्वतंत्रता संग्राम के विस्तार के लिए हर स्थान पर जाने कोशिश करते थे, मैं भी बहुत से स्थानों पर गई व बहुत से लोगों से मिली। जब मैं नौ वर्ष की तो गाँधीजी मुझे नेपाली कहते थे। वह मेरे विचारों व योजनाओं का बहुत आदर करते थे। उनका भजनाव स्थित आश्रम कुण्डलिनी के आधार पर ही था जहाँ प्रत्येक चक्र के बारे में एक एक करके बताया ग है। मैंनें उन्हें कहा कि इसका एक अनुक्रम से अनुसरण करना चाहिए, जिसे उन्होंनें प्रथम शास्त्र पध के सिध्दांत से लेकर ईसा मसीह तक विस्तार से किया। अल्लाह हो अकबर वगैराह सबका उसमे समावे था। वह अक्सर मुझसे परामर्श करते थे।

जो व्यक्ति मेरे बाल्यकाल में मेरे सम्पर्क में आए वह अभी भी मुझे याद करते हैं। कल ही विद्यालय के एक अध्यापक यहाँ कार्यक्रम में आए थे। शायद उनमें कुछ आन्तरिक ज्ञान और बल हो जो उन्हे मुझसे बाँधता है और मुझे इतने वर्षों के बाद पहचानने में सहायता करता है।

जब मैं "साईंस कालिज" में थी तो 1942 के "भारत छोड़ो" आन्दोलन में मैंनें भाग लि था। सारी पुलिस वहाँ तोपें लेकर विद्यार्थियों को डराने के लिए पहुँची थी। मैं अकेले उनके सम्मुख द्वार पर खड़ी रही। एक वर्ष पहले मेरे प्रधानाचार्य साहिब श्रीकृष्ण मोदी पुणे के एक जन कार्यक्रम में आए थे

और आज मैं इसको प्रत्यक्षरूप में देख रहा हूँ। जिस क्षण मैंनें सहारा लिया, मुझे वहाँ से हटा दिया गया"।

जो मुझे बाल्यकाल में जानते थे वह आज भी मुझे पहचानते हैं। उसका एक ही कारण है और वह है - प्रेम, क्योंकि मेरा प्रेम निर्वन्य, निर्पक्ष व आकांक्षा रहित है। इस निर्वन्य प्रेम के कारण ही ये लोग अभी तक मुझे जानते हैं। उन तनाव के दिनों में मेरी माताजी मुझसे कहा करती थी कि हमारी तो अपनी कोई पहचान ही नहीं है, हम तो निर्मला की माताजी और निर्मला के पिताजी के रूप में पहचाने जाते है। जब आप इतनी छोटी आयु के हों तो इसका एक ही कारण है - केवल प्रेम।

मेरा बाल्यकाल से ही यह स्वभाव रहा है कि जिसने जो वस्तु माँगी उसे वह दे दी। मेरे हृदय में सबके लिए बहुत प्रेम व करुणा थी। इसलिए सभी लोगों के दिल की गहराईयों में मेरे लिए स्थान है। उस समय भी मुझे दूसरे लोगों की बुराईयों का ज्ञान था परन्तु मुझे यह ज्ञात था कि अगर उन व्यक्तियों को निर्वन्य प्रेम मिला तो वह एक दिन जरूर सहजयोग में सम्मिलित होंगे और सर्व शक्तिमान परमेश्वर के दर्शन करेंगे। इसलिए यह निर्वन्य प्रेम आप सब में आना चाहिए। इसमें कोई किसी चीज की आशा या इच्छा नहीं करता। कोई आपको कुछ देता है या नहीं इसके लिए आप क्यों परेशान होते हैं। यह सब वस्तुँए तो नश्वर हैं। मैंनें अपने बाल्यकाल में कभी भी सहजयोग की बात नहीं की परन्तु मेरे पिताश्री को इस का ज्ञान था और किसी को नहीं। मेरे पिताजी ने माताश्री को यह सब विस्तार से बताया था क्योंकि उन्हें मेरे बारे में एक दिव्य {डिव्हाइन} स्वप्न दिखाई दिया था। जब मेरा जन्म होने वाला था तो उन्होंने एक चीता देखने की इच्छा व्यक्त की थी और इसी प्रकार के कई स्वप्न उस समय उन्होंने देखे थे।

मैंने निर्वन्य प्रेम के बारे में मुख्यतः एक बात देखी है। विद्यालय, कालिज व आस पड़ोस में सब मेरे बारे में जानते थे। मुझे आश्चर्य होता था क्योंकि वह और लोगों को तो नहीं जानते थे। मेरे भाई को भी आश्चर्य होता था और वह कहते "निर्मला दीदी को सब व्यक्ति कैसे जानते हैं"। लड़कियाँ उसे कहती "हमें मालूम है कि आप निर्मला के ही भाई है"। वह कहते "क्या मेरी अपनी कोई पहचान नहीं है"? केवल निर्वन्य प्रेम से ही आप इतने बड़े समूह से मित्रता रख सकते है। मेरे सभी मित्र मुझे इतने सारे पत्र लिखते थे कि कालेज कार्यालय हैरान होता था कि "यह सब क्या चल रहा है, इस महिला को इतने सारे पत्र कैसे आते हैं"।

फिर मेरी एक बहुत ही पुराने विचारों वाले परिवार में विवाह हुआ। एक लम्बे से घूंघट के तो क्या कहने, वहाँ सबके चरण स्पर्श करने पड़ते थे। उस समय भी मैंने क्या किया? मैंने प्रत्येक को निर्कन्य प्रेम दिया। यदि उनको कोई समस्या होती तो मैं उसका समाधान करती थी। वह मुझे इतना प्रेम करते है कि यदि मै एक दिन के लिए भी लखनऊ जाती हूँ, तो पूरा परिवार मेरे चारों ओर एकत्रित हो जाता है और मुझे एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ते। मैंने यह सब पात्र अदा किए है।

इसप्रकार सब कुछ बहुत आनन्दकारक है। प्रेममय वातावरण है। लोगों से प्रेमपूर्वक व शिष्टाचार से बातें करनी चाहिए। यदि आप उन्हें उनका पद बताकर उन्हें दोषी ठहराये या बेइज्जत करते तो यह एकदम अनुचित है। विनीत भाव से मधुर बोलें और सब कार्य निर्कन्य प्रेम से करे। आप को शायद नहीं पता कि भविष्य में यह आपकी कितनी सहायता कर सकता है। उदाहरणार्थ, मेरे भाई के सभी मित्र मेरा सम्मान अपनी बहिन के समान करते है। अगर मैं उन्हें जरा सा संकेत भी कर दूँ तो वह धरती-आकाश एक कर दें। मैं अन्दाजा नहीं लगा सकती कि मैंने उनके लिए क्या किया है। यदि किसी के लिए कुछ किया है तो मैंने उन्हें केवल प्रेम दिया है। प्रेम में कोई किसी के लिए कुछ करता नहीं है। उन्हे मैंने प्रेम आत्मसन्तुष्टि के लिए दिया और उसका अमूल्य पुरस्कार मुझे मिल रहा है।

प्रेम निर्कन्य होना चाहिए अर्थात बिना किसी आशा और स्वार्थ के। इसमें कोई आत्मस्वार्थ नहीं होना चाहिए - "यह मैं कह रहा हूँ" और "उसके लिए कह रहा हूँ" आदि उच्च विचार नहीं बल्कि यह अनुचित है।

सहजयोग में कुछ पुराने सहजयोगी है और मुझे उनसे बहुत अजीब अनुभव हुए हैं। आप लोगों ने इसे आरम्भ और स्थापित किया है। सहजयोगी तो आधार हैं, यदि आधार ही कमजोर होगा तो सारा भवन गिर जायेगा। यदि आपने किसी को आत्म साक्षात्कार दिया है तो इसका क्या मतलब है? आपने तो नहीं दिया। इसलिए आपको कहना चाहिए कि मैं अकर्मी हूँ - "यह जागृति तो श्री माताजी द्वारा दी गई है" या फिर इस व्यक्ति को अपनी जागृति मिली"। किसी को यह नहीं कहते रहना चाहिए "मैने यह किया", "मैने यह दिया है", ऐसी भावना कभी भी नहीं आनी चाहिए। परन्तु मनुष्यों के बारे में मेरे अनुभव कहते है कि जो व्यक्ति शुरू में सहजयोग में आये है, उनमें यह झूठा अहंकार आ जाता है कि "हम पुराने सहजयोगी हैं", "हम तो आरम्भ के कुछ सहजयोगियों में से है"। जैसे-जैसे सहजयोग फैल रहा है उसी के अनुपात में यह झूठा अहंकार भी बढ़ रहा है कि "मेरे कारण कितने सारे सहजयोगियों

परन्तु अब तो करीब-करीब सभी ऐसे अहंकारी व्यक्ति सहजयोग से निकाले जा चुके हैं। मैंने देखा है कि ऐसे अहंकार को पालनेवाले लोगों को भूत पकड़ लेते है। वे अहंकार में इतना फूल जाते है कि वह सहजयोग में बेचैनी महसूस करते है। फिर उन्हें गुस्सा आता है।वह अपने को स्वयं नियुक्त कार्यक्रम के कार्याधिकृत §इनचार्ज§ समझते हैं। "हम ही यह सब कार्य चला रहे है", हमारी ही वजह से सब ठीक चल रहा है"। इसकी वजह से अतिआवश्यक नम्रता और प्रेम समाप्त हो जाता है और यह सब अनचाही और झूठी गिरावट लाता है।

मैंने पुराने सहजयोगियों में एक और कमी देखी, वह मेरा नाम लेकर स्वयंरचित विचार मार्ग व मन्त्र प्रचारित करते है। सहजयोग की रचना करने का प्रयत्न न करें। कुछ नया करने की इच्छा पश्चिमी बुध्दि में आती है। सहजयोग तो पारम्पारिक है। अब तो आप को फल प्राप्त हो गया है। फल के बाद और क्या करना है? मैने आपको बता दिया है कि क्या करना है और कैसे करना है। हम नये समूह बनाने में विश्वास नहीं करते। ऐसी प्रवृत्ति तो राजनीति से आती है। इसलिए नई चीजों का आविष्कार न करे और न ही यह कहे कि "श्रीमाताजी ने कहा है, इसलिए आप ऐसा करे"। वह स्वयं कुछ आविष्कार कर, मेरे नाम का प्रयोग करके, उसे प्रभावकारी बनाकर, अपने ही बुने जाल में फँस जाते है। आप ऐसा सब अस्वीकार कर दें और कहे कि "मै ऐसी बेकार चीज नहीं मानता। मै वही करूँगा जो श्री माताजी कहती है"।

यदि आप को कोई नया विचार या धारणा मनमें आए, तो मुझे लिख सकते है ताकि मैं उसे पढ़ सकूँ और उपयुक्त लगने पर उसके अनुसार बता दूँगी। "यह ऐसा होना चाहिए और ऐसा नहीं" ऐसा मैं आपको समझा दूँगी।

जिस क्षण भी "मै" की भावना आती है, सहजयोग नहीं रहता। "मै नहीं" की भावना अपने में धारण करनी चाहिए। जहाँ मैं आ जाता है, वहाँ सब समाप्त हो जाता है। यदि आप क्रुध्द स्वभाव के है तो अपना क्रोध कम कीजिए। जितने भी गर्म स्वभाव के लोग सहजयोग में आए, वह सब छोड गए। यदि आप गर्म स्वभाव के है तो जानने की कोशिश कीजिए कि यह कहाँ से आता है। यदि यह यकृत से है तो अपना यकृत §लिव्हर§ ठीक करे, पर आप शांत रहे।

पूजा के समय बहुत शांति मिलती है जब तक आप अपने भावों को नहीं बदल लेंगे और जरा जरा सी चीज पर क्रोधित होने पर विजय न पा लेंगे तब तक आप उन्नति नहीं कर सकते। केवल अपने स्वभाव पर नियंत्रण के लिए ही नहीं, बल्कि इसे जड से उखाड़ फेंकने के लिए परिश्रम करना है। सहजयोग में इसके लिए एक मार्ग है। इसे कैसे करना है यह आपको अध्ययन करना है और समझना है।

प्रमुख बात यह है कि सब को केन्द्र पर आना है यदि कोई यह सोचता है कि वह अकेला, एकांत में ध्यान कर सकता है तो यह गलत है। यदि आप केन्द्र में नहीं आएँगे तो आप कुछ भी नहीं पा सकेंगे। आपको इसकी गहराई में जाना है। इन्हीं गहराईयों से आपको अन्य व्यक्तियों से भी केन्द्र में मित्रता करनी है। इसी मित्रता में हमें विश्व निर्मल धर्म के सिध्दान्तों को सीखना है और अपने जीवन में उतारना है।

हम जाति पाँति, ऊँच-नीच और किसी कहे-धर्म, जो अंधाधुन्द माने जाते है, की रूढ़वादिता को मान्यता नहीं देते। सत्य धर्म का हम सम्मान करते है पर दिखावटी क्रिया पध्दति और मतों को हम नहीं मानते। वैधव्य को हम नहीं मानते क्योंकि यह झूठा विचार है। यह पुरुष द्वारा स्त्री पर अन्याय से लादा गया है। आप किसी भी सम्प्रदाय की निन्दा से न डरे। कहिये "श्रीमाताजी ने हम लोगों को मस्तक पर कुकुम लगाने का आदेश दिया है"। सूने माथे से घूमना मना है। जो अपने को विधवा मानती है वे वास्तव में गलत है। यदि वैधव्य सही होता तो यह पुरुषों पर भी लागू होता। पुरुषों मे तो वैधव्य नहीं है, फिर स्त्री वैधव्य क्यों भुगते। पुरुष ने यह वैधव्य स्त्री को घोर यातना पहुँचाने के लिए बनाया है। मेरे विचार में उन्हे इससे कुछ नहीं मिलता।

एक और कारण से सहजयोगी में पकड़ आती है वह है गलत गुरु को पूजना। यह बहुत खतरनाक है। वह गुरु कभी भी आप में प्रवेश कर सकता है। उसने जो कुछ भी किया हो, अब ईमानदारी से आपको अपना उससे पीछा छुडाना है और अपने को स्वच्छ करना है। इसमें दुखी और निराश होने की कोई बात नहीं है। इसके बारे में गलत विचार नहीं पालने चाहिए। यदि एक छोटासा हिस्सा भी ध्यान से निकल गया तो वह बढ़कर हमारे हाथ से निकल जाएगा और एक बड़े पेड़ का रूप ले लेगा। यदि इसका एक छोटा सा टुकड़ा भी रह गया तो विश्वास रखें कि आपकी चैतन्य लहरियाँ समाप्त हो जाएँगी।

विदेशी सहजयोगी कई प्रकार के है। कुछ बहुत गहरे है जो सहजयोग के हृदय तक पहँच जाते हैं। कुछ अपपके व कुछ व्यर्थ हैं। आपका आचरण उन सबके प्रति ठीक व मधुर होना चाहिए। आप आश्चर्य से देखेंगे कि जो ईमानदार नहीं है वह स्वयं ही बाहर हो जायेंगे। जिन्होंने सहजयोग को अपने अंतर से ठीक से नहीं समझा है आपको उनकी मदद करनी चाहिए। आपको उन्हे बुलाकर उन पर काम करना चाहिए। परन्तु मैंने देखा है कि वह आपके पास आते है आप यह घोषित कर देते है कि उन्हे तो भूत ने पकड़ रखा है। महाराष्ट्र में सत्य बताते समय हम थोडा सा कर्कश हो जाते है "हैलो, आपको तो बहुत सारे भूतों ने पकड़ रखा है, अच्छा हो कि आप यहाँ से दफा हो जाए"। यह कर्कशता कभी हम पर अधिकार कर लेती है। जब मैं किसी से पूछती हूँ कि तुम सहजयोग से क्यों चले गए हो तो वह कहते हैं कि "माँ, उन्होंने मुझे साफ कह दिया कि मेरे घर में मृत आत्मायें है और मुझ पर भूतों ने अधिकार पा लिया है"।

जब मै सहजयोगियों से पूछती हूँ तो वह उत्तर देते है कि "हमने तो केवल सत्य कहा था"। परन्तु यदि यह सत्य भी है तो भी सिर्फ उतना ही कहना चाहिए जितना उनके लिए लाभप्रद हो। क्या जो आपने कहा उससे उन्हें लाभ हुआ? - बल्कि उन्होंने सहजयोग का शुभावसर खो दिया और चले गये। जब आप सत्य बोले तो यह आवश्यक नहीं कि वह मीठा और चाशनी चढा हो परन्तु हितकारी हो। ऐसे बोलो जो दूसरों का पोषण करे। यदि किसी की कोई बाधा है तो उसे समझे और उन्हें विश्वास दिलाये कि वह बाधा आप जड़मूल से समाप्त कर सकते हैं। क्यों कहे कि यह भूत है। जब आप कहेंगे कि "तुम्हें भूत ने पकड़ रखा है" तो वह व्यक्ति कहेगा कि "डॉक्टर ने तो कभी ऐसा नहीं कहा कि मुझे भूत ने पकड़ा है फिर आप कैसे कह रहे हैं?"

यह अच्छा हुआ कि यह सब मैंने आपको साफ तौर पर बता दिया। आज तक मैंने नये सहज-योगियों की कठिनाईयों के बारे में नहीं बताया था। यह पुराने सहजयोगियों को ठीक से समझना है जिससे वह नये सहजयोगियों को निर्कल्य प्रेम दे सके। परन्तु वह किसी प्रकार अपने को अग्रणी रखने के प्रयत्न में लगे रहते है। आप पहली पंक्ति मे बैठे व्यक्ति को इंगित कर सकते है कि वह एक पुराना सहजयोगी है, वह पुराना है - उसे तो आगे ही बैठना चाहिए। मैं कुछ खास हूँ और मेरी कुछ खासियत हैं" मतलब उन्हें आगे ही बैठना हैं। तो आप कह सकते है कि वह व्यक्ति व्यर्थ का हैं। यदि उसे कुछ कार्य दिया जाये तो उसका उत्तरदायित्व उसी क्षण वह दूसरे पर डाल देगा "तुम यह करो, तुम वह करो" और

वह चारों ओर घूमेगा और अन्य सबसे काम करायेगा। दूसरों पर काम थोपने वाले ऊँट पर बैठकर भेड़े हाँकना चाहते हैं।

यह हालात है फिर जब मैं कहती हूँ कि आप सहजयोग छोड़ दे तो वह जमीन पर गिर पड़ते है - "श्री माताजी मैं तो इतना पुराना सहजयोगी हूँ।" "समझा, आप तो पुराने ही नहीं घिस भी गये हैं इसीलिए अच्छा हो कि आप हमें छोड दें"।

सभी से प्रार्थना हैं कि वह नम्रतापूर्वक व आदरपूर्वक प्रतिज्ञा करे कि "मैंने अभी कुछ नहीं पाया हैं, मुझे अभी और ऊँचा उठना हैं। मैं दूसरों को ज्योति देता हूँ क्योंकि उससे मुझे और जागृति मिलती है"। आप दूसरों को जरूर जागृति दे। कुछ लोग बहुत पुराने और घिसे हुए है और कुछ जो नये है व बहुत विकसित है। कई अवसरोंपर मुझे जो पुराने सहजयोगियों के स्वभाव के अनुभव हुए है मैंने उन्हें कहने का सोच लिया है कि "अच्छा हो कि आप स्वयं की जाँच करे कि कहीं आपको ही तो भूत ने नहीं पकड़ लिया है" यह अहंकार के भूत है पहेले आप देखे कि आप अहंकार के भूत की पकड़ में तो नहीं है - जिसकी वजह से आपको नुकसान होगा। कुछ क्षण के लिए यह सुखदायी है कि आप आदरणीय और समर्थ हो गये। यदि आप सहजयोग में आकर प्रभाव पाना चाहते है तो अच्छा हो कि सहजयोगी सहजयोग न ही करें। यह मूल तत्व है।

धन का दुरूपयोग करना सहजयोग में सख्त मना हैं। यह धर्म के खिलाफ है। धन के बारे में सावधान रहे। धन कमाने के लिए सहजयोग का उपभोग न करें। सहजयोग के बाहर आप लाभ उठा सकते हैं। पवित्र स्वभाव वाला बनना अति आवश्यक है। दुरूपयोग का परिणाम बहुत बुरा होता है। एक व्यक्ति ने थोडे से ही धन की गड़बड़ी करी, बेचारा, उसका बेटा ही चल बसा।

कुछ दिन पहले एक व्यक्ति को दिल का दौरा पड़ा। उसने थोडेसे पैसों की गडबडी की थी। जब मैंने कुछ चीजों का पता लगाना चाहा तो वह क्रोधित हो गया और आठ दिन के अन्दर उसकी मृत्यू हो गई।

.....10

आप लोग मुझसे असत्य न बोले। एक व्यक्ति मेरे पास आया और एक लड़की के बारे में असत्य बोलने लगा। वह व्यक्ति अब पक्षाघात से पीड़ित है, अपनी बोलने की शक्ति खो चुका है। आपस में भी असत्य न बोले। स्पर्धा की जगह प्रेम भावना बढाईये। किसी को मूर्ख बनाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। क्योंकि आपने ईश्वर के साम्राज्य में प्रवेश कर लिया है, आपको वहाँ के नियमों को याद रखना चाहिए। वहाँ हम असत्य नहीं बोल सकते, न ही धन का दुरूपयोग कर सकते, और न ही अपनी शक्ति से दूसरों पर आक्रमण कर सकते। यदि आप यह तीनों बुराईया छोड दें तो सहजयोग का आपको पूरा आशिर्वाद प्राप्त है। फिर असभ्य व्यवहार की देन स्त्री-पुरुष के भेद का भ्रम समाप्त हो जाता है। यदि ऐसा नहीं होता तो वह सहजयोगी नहीं है। व्यसन स्वयं छूट जाते है पर यह तीन कमजोरियाँ रह जाती है। सबसे खतरनाक है शक्ति - बोध - दूसरे के ऊपर शासन करने की इच्छा। जहाँ भी आप ऐसी शक्ति के इच्छुक सहजयोगी देखते है, विश्वास करे कि वह एक दिन जरूर इस दृश्य से ओझल हो जायेंगे। ऐसे लोगों के साथ कुछ अजीब घटनायें होती हैं जो उन्हें दूर ले जाती है।

सहजयोग में कई ऐसे व्यक्ति हैं जो अग्रभाग मे सदा दौड़ते रहते हैं। किसी को भी अनावश्यक रूप से सदा आगे आना या सदा अपने को पेश करते नहीं रहना चाहिए। "श्री माताजी" के चरणस्पर्श क्यों? जबकी मेरे चरण तो सदा आपके हृदय में है - चरण स्पर्श से और क्या लाभ होगा। यह आपकी भावना होनी चाहिए। यदि कोई अग्रणी रहने का प्रयत्न करता है तो अगले वर्ष वह गायब हो जायेगा। यह श्री भैरवनाथ का काम है। कोई भी जो बहुत आगे आगे आता है वह अपना सिर स्वयं काट लेता है। मैं उन्हें धैर्य रखने को कहती हूँ लेकिन वे बिल्कुल नहीं सुनते।

इसका अर्थ है कि सदा दो शक्तियाँ काम कर रही है। एक केन्द्र की ओर लगाने वाला {सेन्ट्रीपेटल} और दूसरा केन्द्र से दूर लगने वाला {सेन्ट्रीफ्युगल} एक आपको केन्द्र की तरफ खींचता है व दूसरा केन्द्र से दूर ले जाता है, क्योंकि ईश्वर के साम्राज्य में सबके लिए स्थान नहीं है।

सभी व्यक्ती सीधा मुझसे, सम्पर्क करना चाहते है, मेरे पास इतना समय नहीं हैं कि प्रत्येक 25 पन्नों का पत्र स्वयं देखूँ, यदि कभी पढ़ भी लिया तो वह निरर्थक बातों से भरा है - मेरी माँ ऐसी है, मेरी माँ के अंकल, भाई वगैरह, मुझसे उनसे क्या लेना देना। सहजयोगी संबंधी है और मुझे और आपको, आपके दूसरे सम्बन्धियों से कुछ लेना देना नहीं। जब तक आपके सम्बन्धी सहजयोग में नहीं आते

तब तक न मुझे, न आपको और न ही ईश्वर को उनसे कुछ लेना देना है। इसीलिए उनके बारे में कुछ न बताये, उन्हें सहजयोग में आने दिजिए। यदि कोई कहता है कि मुझे श्री माताजी के पास ले जाओ - जैसे वह सिफारिश चाहता हो, वह आपके लिए जो भी हो परन्तु मुझे उससे क्या करना? उसका सम्बन्ध बनाने के लिए आप उसे मेरी तस्वीर दे दे उसे स्वयं तस्वीर से अपना समाधान करने के लिए कहें।

सीधा इलाज करने का प्रयत्न न करें। मेरी तस्वीर के आगे ही बैठें। केवल तीन प्रकार के रोग होते है, दाँयी ओर के रोग, बाँयी ओर के रोग व मध्य मार्ग के रोग, बाँयी ओर के रोग मानसिक कारणों व दाँयी ओर के रोग शारीरिक व मानसिक रोग व मध्य मार्ग के रोग गलत गुरू या अनाधिकृत ज्ञान के अभ्यास के कारण होते हैं।

यदि आप इन तीनो में योग्यता हासिल कर लें तो केवल तस्वीर से ही आप किसी भी प्रकार की बाधा बता सकते है। शीघ्र ही हम इसपर एक पुस्तक प्रकाशित कर रहे हैं, तब कोई भी यह नहीं कह सकेगा कि "श्री माताजी ने मुझे ऐसा कहा या वैसा कहा"।

प्रत्येक व्यक्ति को स्मरण रहे कि घंटो तक ध्यान लगाने की आवश्यकता नहीं है, केवल 10 मिनट ही काफी है। यदि किसी को इतने समय ध्यान लगाने की आवश्यकता है तो वह मूर्ख है। अच्छा हो कि ऐसे पागलपन से बचें। क्योंकि यदि कोई स्थान है और उसका कोई द्वार है तो उस द्वार से अन्दर आने के लिए कितना समय लगता है? परन्तु यदि आपने प्रथम पर्वत पर चढ़ने का सोचा है तो इसमें तो समय लगेगा ही। पर्वत पर क्यों चढ़े? जो वस्तु इतनी सहज है यदि उसे पेंचीदा बनाया तो वह सहजयोग नहीं है।

इसीलिए आज का भाषण बहुत महत्वपूर्ण है और इसका अनुवाद करके सभी केन्द्रों पर भेजे।

.....12

## दिल्ली

चाहे कोई भी गलती क्यों न हो, माँ अपने बच्चों को प्रेम से संभालती है। वह कई चीजों की अनदेखी कर सकती है, परन्तु उन्हें अपने ही ढंग से ठीक करती है। हम अपने प्रेम से दूसरों की कमजोरियों को दूर करके उन्हें स्वच्छ कर सकते हैं। यह प्रेम की शक्ति है। अभी तक हमने प्रेम की शक्ति का कभी भी प्रयोग नहीं किया है। प्रेम की शक्ति बहुत अद्भुत है। तलवार की शक्ति का प्रयोग करना बहुत सरल है, परन्तु प्रेम की शक्ति इतनी अधिक है कि हम तलवार की शक्ति को भूल जाते हैं।

"निर्वाच" वह प्रेम है जो सभी बन्धनों से मुक्त है। यह कोई नहीं समझ सकता कि सिर्फ प्रेम के कारण माँ पूरे संसार का भ्रमण कैसे कर रही हैं। यह केवल प्रेम का आनन्द है। सहजयोगियों को देखने मात्र से ही मुझे इतना आनन्द मिलता है कि मैं निर्विचार हो जाती हूँ। जिस तरह समुद्र की लहरें उमड़ती हैं और विभिन्न आकार बनाती हैं, उसी तरह सब कार्यों को कार्यान्वित होता देख कर मैं आनन्दित होती हूँ।

कुछ लोग धनी हैं, कुछ गरीब, यह सब क्षणभंगुर चीज़े हैं, अपने हृदय के अन्दर देखिए और उस प्रेम का आनन्द लीजिए। उस प्रेम के साथ आप ऊपर उठिये और एक बार फिर से महानता को प्राप्त करिए।

हम उस श्रेणी के लोग हैं जो दूसरों को सिर्फ प्यार ही देते है और जहाँ प्यार होता है वहीं जाते हैं। जो व्यक्ति दूसरों को प्यार देता है वह स्वतः ही ठीक हो जाता है। जब हम घर के बाहर जाते है तो हमे अपनी माँ या पत्नी को सूचित करना चाहिए, इस तरह उनके प्यार की शक्ति सदैव हमारे साथ रहती है।

## 66 वा जन्म दिवस पूजा

### 21·3·89, सूर्यवंशी हॉल, बम्बई - संकलित अंश

मैं सचमुच समझ नहीं पा रही हूँ कि मैं इन सब उपहारों के बारे में, जो कि आप मेरे लिए

आपकी कुंडलिनी को बहते हुये देखना ही मेरे लिए उपहार है। पदार्थ का तत्व यह है कि इसके द्वारा आप अपने प्रेम को व्यक्त कर सकते है। इसीलिए पदार्थ को आप उपहार के रूप व्यक्त करते हैं। आपके हृदय में बहुत सी भावनाएं हैं जिनको कि व्यक्त करना है। जब आप इन प्रेम की भावनाओं से पदार्थ को ढ़क देते हैं और मुझे देते हैं तो मेरे लिए एक बहुमूल्य उपहार बन जाता है। जैसे कि साधारण कांच पर जब पारा चढा दिया जाता है तो वह दर्पण बन जाता है ठीक उसी तरह आपके प्रेम से लिपटा यह पदार्थ मेरे प्रतिबिम्ब का दर्पण कर जाता है। जब प्रेम को शब्दों में व्यक्त किया जाता है तो आप गदगद हो उठते हैं, परन्तु उपहार के द्वारा इसे व्यक्त किया जा सकता है। परन्तु अपने प्रेम को व्यक्त करने के लिए कीमती उपहार लाने की आवश्यकता नहीं है, एक बहुत ही साधारण सी कलात्मक और जाति पारम्पारिक वस्तु जो कि आपके निवास स्थान का प्रतिनिधित्व करती हो, सबसे उत्तम है। साथ ही वह छोटी होनी चाहिए ताकि मुझे उनके लिए दूसरा मकान न बनाना पड़े।

इसी प्रकार पूजा में दी गई भेंट व्यक्त करती है आपके प्रेमको, जो कि प्रेरणा देता है और वातावरण को सुधारता है। थोडा सा कुमकुम (लगाना) भी स्वच्छकारी सिध्द हो सकता है। परन्तु वस्तु का प्रयोग आत्मरंजन के बजाय प्रेम को व्यक्त करने के लिए करना चाहिए तभी वह वातावरण को सुधार सकती है। इसी प्रकार से कलाकार मानवता के प्रति अपना प्रेम प्रकट करने के लिए कला की रचना करता है।

जब मैं आप के द्वारा लाए हुये इन सब फूलों को देखती हूँ तो मैं आपके बारे में सोचती हूँ कि जो पहले फूल थे, अब फल के रूप में परिपक्व हो गये हैं। यह विचार मुझे महान प्रसन्नता प्रदान करता है।

मुझे खुशी है कि दिल्ली में एक नया आश्रम बन गया है। अब सब जगह आश्रम बनने शुरू हो गये हैं। सेवानिवृत्त होने पर सहज योगियों को आश्रम में आकर रहना चाहिए। पोती पोतों को भी आश्रम मे आकर रहना चाहिए। जिससे दादा - दादी अपने पोती पोतों की देखभाल कर सकते हैं और एक दूसरे के साथ का आनन्द ले सकते हैं। बच्चों को दादा - दादी, माता - पिता की अपेक्षाकृत, अधिक अनुशासित कर सकते है। माता - पिता बच्चों से मिलने आश्रम में आ सकते हैं।

कर सकते हैं। दो सहज योगियों के बीच कोई अन्तर नहीं हैं। किसी भी सहज योगी को स्वयं को दूसरो से बड़ा नहीं समझना चाहिए। किसी भी सहजयोगी को सहजयोग के बारे में नई धारणाएं बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। आप स्वयं सहज योग बनाने की कोशिश न करें।

धन से लगाव, धर्म - ग्रन्थों और धर्म का अन्धानुकरण तथा कट्टरवाद खत्म होना चाहिए। सार्वजनिक कार्यक्रमों में सहजयोग की कोई पुस्तक नहीं बेची जानी चाहिए। मेरा फोटो मुफ्त में दिया जाना चाहिए। सभी किताबें और लेख, जिनको मेरी स्वीकृति प्राप्त नहीं हैं, जप्त कर ली जानी चाहिए। वह किताबे जिनमे मंत्र दिये गये है शीघ्र ही वापस लेनी चाहिए। आप कानून की सीमा में रहे और हिंसा को न अपनाये। जिन व्यक्तियों ने ट्रस्ट की अनुमति के बिना किताबे छापी हैं, उनको जब्त कर लिया जाना चाहिए। कृपया बिमार व्यक्तियों को न लायें। उनको बताना चाहिए कि वे फोटो के द्वारा स्वयं को किस प्रकार ठीक कर सकते हैं।

कृपया व्यक्तिगत उपहार और सोने के उपहार न लायें। हमें बहुत से कार्य पूरे करने है और आपको उसके लिए प्रति माह कुछ धन बचाना चाहिए। उपहार सामुहिक होने चाहिए।

मेरे जन्मदिन पर प्रत्येक व्यक्ति को यह सौगन्ध लेनी चाहिए कि वह मेरे अगले जन्मदिन पर कम से कम 5। नये सहज योगी लाने की कोशिश करे। आप यदि समुह बना कर गाँव और नये स्थानों पर जायें तो आप यह कार्य बहुत आसानी से कर सकते है। साधारण और मृदु वाणी का प्रयोग करे। मै आशा करती हूँ कि आप मुझे अगले वर्ष इस तरह का उपहार देंगे। यह मेरी इच्छा है। मैं आशा करती हूँ कि आप इसे पूरा करेंगे।

- भगवान आपको आशीर्वाद दे

**महालक्ष्मी और ईस्टर पूजा**

**रविवार 26 मार्च, 1989 बरासात कलकत्ता के संकलित अंश**

अमीबा (सूक्ष्म जन्तु) से मानव तक की उत्क्रांति (इव्होल्यूशन) सुषुम्ना नाडी के द्वारा हुई है। हम सुषुम्ना नाडी के द्वारा महालक्ष्मी तत्व की ओर बढ़ते है। महालक्ष्मी तत्व की स्थापना के लिए हमें बहुत सी बातों का ध्यान रखना होगा।

सबसे पहले, देवी लक्ष्मी अपने हाथों में गुलाबी रंग के दो कमल लिए हुए हैं। हमारा हृदय भी उसी {गुलाबी - प्रेम प्रतीक} रंग का होना चाहिए, जो कि सदैव प्रेममय हो, सुख और आश्रय देने वाला हो। यहाँ तक कि इसकी {कमल} गोद में {भौंरा} शुष्क और काटेदार जीव भी आराम प्राप्त कर सकता है।

कमल अत्यन्त सुन्दर भी होता है। हमें उसी तरह सुन्दर, शिष्ट व्यवहार करना चाहिए और मधुर बोलना चाहिए।

जब यह पानी की सतह पर होता है तो अपनी सुगन्ध से आकर्षित करता है। एक धनवान की तरह उसके पास सौन्दर्य, सुगन्ध, सब कुछ है, परन्तु वह {कमल} यह सब दूसरों को देने की प्रतीक्षा करता रहता है। वह व्यक्ति जो सदैव अपने बारे में सोचता रहता है, लक्ष्मी तत्व को कभी प्राप्त नहीं कर सकता। एक लक्ष्मीपति सदैव दूसरों की सेवा के लिए तत्पर रहता है और जरूरतमन्दों को सुरक्षा प्रदान करता है। वह हमेशा दूसरों की भलाई के लिए कार्य करता है। उदाहरण के तौर पर यदि वह किसी संस्था या किसी व्यवसाय का मालिक है तो वह हमेशा अपने मजदूरों के कल्याण, सुख के बारे में सोचता रहता है, उन्हें आतिथ्य देता है, तथा उनकी एक परिवार के पिता की तरह देखभाल करता है। एक कंजूस व्यक्ति इस तत्व को कभी प्राप्त नहीं कर सकता।

यदि आप मध्य में हैं तो आप लक्ष्मी तत्व बन सकते हैं, यहाँ तक कि आप पुरानी प्रसिद्ध फर्म की तरह कीर्ति प्राप्त कर सकते हैं और आपके बच्चों को उस पर गर्व होगा।

लक्ष्मी तत्व की संतुलित अवस्था को प्राप्त करना है। एक हाथ से लक्ष्मी देती है। ऐसे गुप्त उपहार दिये जाने चाहिए जिनके बारे में कोई भी न जानता हो। जो उपहार आप देते है उनमें आपका कोई लगाव नहीं होना चाहिए। हमें इसके बारे में शान के साथ नहीं बोलना चाहिए। परन्तु प्राप्तकर्ता को उससे आनन्द मिलना चाहिए।

दूसरों को कुछ देने से बहुत अधिक संतोष प्राप्त होता है। प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति देने के

कमल किसी पर दबाव नहीं डालता, जैसे कि "मैने यह किया", "मैं यह हूँ", यह "मैं" छोड़ना चाहिए, या यह "मेरा" है - "मेरे" की देखभाल करने की जिम्मेदारी नहीं होनी चाहिए। आप सिर्फ आनन्द में रहिए।

काम चलता रहता है और व्यवसाय आगे बढता रहता है, परन्तु सबसे बडा आनन्द दूसरों को देने में है। प्रेम में आपको पता होता है कि दूसरे को क्या पसन्द है। सबसे बड़ी बात यह है कि हमें दूसरों के प्रति अपने प्रेम को कैसे प्रकट करना है।

हमें यह भी जानना चाहिए कि धन को खर्च कैसे करना है। यदि हम यह जानते होते कि धन को कैसे खर्च करना है तो संसार में इतने दुख न होते। वास्तव में, धनी व्यक्ति को अधिक समस्याएं होती है। यह देखा गया है कि जब समृध्दि आती है तो लोग आसक्तवादी हो जाते है। शराब की दुकानें खुल जाती हैं, गन्दी महिलायें उन्नति करना शुरु कर देती हैं, आदि।

पहले लक्ष्मी तत्व स्थापित होता है, और जब व्यक्ति आत्म-साक्षात्कार के द्वारा संतुलन प्राप्त कर लेता है तो उसके अन्दर महालक्ष्मी तत्व स्थिर हो जाता है। ऐसी स्थिति में आपके पास कुछ भी न होते हुये सब कुछ होता है। यह आत्मा को जानने की स्थिति है। आत्मा, आत्मा के परमसुख का आनन्द प्राप्त करती है। बाहर का आँशिक सुख हमारे अहम् का हिस्सा है। इसलिए सहजयोग में हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि आज अपने पुनर्जन्म की स्थापना करे।

## काठमांडू पूजा

### 30 मार्च, 1989 स्थल - आश्रम

नेपाल की देखभाल ने-पाल नाम के ऋषि करते थे। ईसा मसीह भी नेपाल आये थे। धरती माँ द्वारा उत्पन्न किया गया यह विशेष देश है। यह केवल एक समुद्र था। अमृत-मंथन के पश्चात हिमालय ऊपर आना शुरु हुआ और एवरेस्ट तक पहुँचा। इसकी रचना भारत, जो कि विश्व की कुंडलिनी है, की रक्षा करने के लिए की गई। कुंडलिनी को सुरक्षा प्रदान करना आवश्यक था। वह विराट का मस्तिष्क है। विराट की कल्पना इस तरह से की गई कि नेपाल सहस्त्रार था। प्राचीन संस्कृति की रक्षा करने के लिए

उन्हे किसी देश के चारों ओर घेरा बनाना पडा। श्रीगणेश जी की भारत में स्थापना की गई। इसीलिए मुझे कर्क रेखा पर स्थित इस देश में जन्म लेना पड़ा।

वास्तव में भारत और नेपाल एक ही देश है। भारत की विशेषता यह है कि मनुष्य इधर उधर स्वतन्त्र रूप से घूम सकते है और यहाँ तक कि जंगल में भी रह सकते है, ध्यान कर सकते है, फलों आदि पर भी अपना जीवन बिता सकते है। जानबूझ कर इस देश को आध्यात्मिकता के लिए बनाया गया था। हालांकि लोगों को देखकर आप यह नहीं पहचान सकते हैं क्योंकि भयानक मनुष्य सभी जगह हैं। लेकिन यही एक ऐसा स्थान है जहाँ आंतरिक क्रान्ति हो सकती है। इस देश में मनुष्य आत्मा के बारे में अधिक जानते है। इस तथ्य में कोई भी पक्षपात नहीं है कि आध्यात्मिकता के बारे में जानना ही सबसे कठिन कार्य है। लोगों को बहुत कष्ट उठाना पड़ा। जो लोग आध्यात्मिक हैं उन्हे दूसरे सहन नहीं कर सकते। सत्य को पचा पाना मनुष्य के लिए बहुत ही कठिन है। जो लोग आत्म-साक्षात्कारी हैं वही सत्य को समझ सकते हैं, दूसरे नहीं। इसीलिए वे विध्वंसक प्रतिक्रिया करते हैं। प्रत्येक देश में ऐसे लोगों ने साधुओं को यातनाएं दी है। केवल आपका भोलापन ही आपको सुरक्षित रख सकता है।

केवल विश्व निर्मल धर्म ही आपके अन्तः का धर्म है। एवरेस्ट पर चढने से आप सत्य को नहीं जान सकते हैं। केवल कुंडलिनी के माध्यम से ही सत्य को जाना जा सकता है। ईश्वर के साथ एकाकार हो जाने की शक्ति हमारे अन्दर ही निहित है। जो कुछ हमारे अंदर है वह प्रतिमा में और उसके बिना भी प्रदर्शित होता है। प्रतिमा की रचना इसलिए की गई कि हम यह समझ सके कि हम मार्ग पर है अथवा नहीं। इसी प्रकार कैलाश पर्वत के एक ओर बहुत शांत है जबकि उसके दूसरी ओर जो कि अहंकार है, बहुत ही अशांत है और उसको "राक्षसतल" कहते है। मध्य में भगवान शिव के समान कैलाश पर्वत है। श्री ब्रह्मा और श्री विष्णुकी दो और प्रतिमाएं है। इसी प्रकार जो भी कुंडलिनी के बारे में लिखा गया है उसको खोजना चाहिए। आपने मेरे बारे में बहुत सी चीजें देखी है। "ओंकार" में प्रकाश है और वह प्रकाश कैमरे के द्वारा चित्रित किया गया है। सत्य को इस तरह से प्रदर्शित किया गया है कि आप उसे पहचान सके। परन्तु यदि आप नहीं पहचानना चाहते हैं तो कोई आपकी सहायता नहीं कर सकता। सत्य को पहचान कर ही हम सच्ची भक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्न यह है कि क्या आप समझदार हो गये है। किस तरह से फलों से लदा वृक्ष नीचे झुक जाता

परिहास का आनन्द लो। जब तूफान आता है तो बड़ा पेड़ गिर जाता है जबकि घास का छोटा सा तिनका पूर्ववत रहता है। याद रखो कि सर्वशक्तिमान भगवान ही सब कुछ करता है, हम कुछ नहीं करते हैं। हमें समुद्र के समान अपनी सीमाओं में रहना चाहिए जो कि सदैव अपनी सीमा में रहता है।

6 सबसे अधिक महत्वपूर्ण शब्द -
"मैं मानता हूँ मैंने गलती की"

5 सबसे अधिक महत्वपूर्ण शब्द -
"आपने एक अच्छा कार्य किया"

4 सबसे अधिक महत्वपूर्ण शब्द -
"आपकी राय क्या है"

3 सबसे अधिक महत्वपूर्ण शब्द -
"यदि आप चाहे"

2 सबसे अधिक महत्वपूर्ण शब्द -
"आपको धन्यवाद"

1 सबसे अधिक महत्वपूर्ण शब्द -
"हम"

सबसे कम महत्वपूर्ण शब्द -
"मैं"

## कृपया याद रखें

1. श्री माताजी का फोटो किसी को न बेंचे। यह सच्चे खोजनेवालों को अनुसरण कार्यक्रम में निशुल्क दिया जाना चाहिए लेकिन किसी सार्वजनिक कार्यक्रम में नहीं।

2. सार्वजनिक कार्यक्रमों में कोई पुस्तक नहीं बेची जानी चाहिए। केवल श्रीमाताजी द्वारा स्वीकृत की गई पुस्तके, केन्द्र पर सच्चे खोजनेवालों को दी जानी चाहिए। किसी रोग से मुक्ति दिलाने से सम्बन्धित मन्त्रों की कोई किताब नहीं छपी जानी चाहिए।

3. अंगूठी, पेंडल आदि का कोई व्यवसाय नहीं होना चाहिए। इन पर कोई लाभ नहीं लिया जाना चाहिए, इन्हे लागत मूल्य पर सिर्फ सहज योगियों को बेचा जाना चाहिए।

4. यदि कोई सहजयोगी, सहजयोग पर कोई किताब छापना चाहे तो उसे लाईफ/ट्रस्ट, बम्बई की पूर्व अनुमति लेनी चाहिए। सर्वाधिकार ट्रस्ट के पास रहेंगे।

5. व्यक्तिगत रूप से वीडियो और कैसेट को कापी नहीं किया जाना चाहिए। यह सब केन्द्रों से प्राप्त किया जा सकता है।

6. चैतन्य - लहरी की कापी या ज़ेरॉक्स नहीं करना चाहिए। सबको अपनी प्रति स्वयं खरीदनी चाहिए।

7. कृपया नये खुलने वाले केन्द्रों की सूचना हमें दे।

8. फोटो पर प्रतिदिन कुमकुम लगानी चाहिए और उसे गुलाबजल से साफ करना चाहिए।

---

वार्षिक शुल्क : अंग्रेजी रु॰200॰00

हिन्दी रु॰108॰00

मराठी रु॰108॰00

ड्राफ्ट 'विश्व निर्मल धर्म, पो॰बा॰1901, कोथरूड, पुणे - 411029 के पक्ष में भेजे।